वर्ष-3 अंक : 30
सहयोग शुल्क : रु.1 / जून: 2019

ऊँकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

दिव्यांग सेतु

संपादक : - संतश्री ऊँऋषि प्रितेशभाई

जीवन में हमेशा कोशिश करते रहे, समस्याएं तो बहोत आयेंगी-जाएँगी। बस, उनका सामना करके जीवन सार्थक करना हमारा कर्तव्य है।

- संतश्री ऊँऋषि प्रितेशभाई

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- वर्तमान पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवासस्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

जब पश्चिम ने वन-फल खाकर, छाल पहनकर लाज बचाई ,

तब भारत से साम-गान का स्वर्गिक स्वर था दिया सुनाई।

अज्ञानी मानव को हमने, दिव्य ज्ञान का दान दिया था,

अम्बर के ललाट को चूमा, अतल सिन्धु को छान लिया था।

साक्षी है इतिहास प्रकृति का,तब से अनुपम अभिनय होता है,

पूरब में उगता है सूरज, पश्चिम के तम में लय होता हैं।

विश्व गगन पर अगणित गौरव के, दीपक अब भी जलते हैं,

कोटि-कोटि नयनों में स्वर्णिम, युग के शत सपने पलते हैं।

– अटल बिहारी वाजपेयी

माननीय प्रधानमंत्री श्री,

वर्ष २०१९ के लोकसभा चुनावों में पूर्ण बहुमत के साथ जनता का विश्वास प्राप्त करके सरकार बनाने पर हृदय से अभिनंदन। आपकी दूसरी टर्म प्रथम से भी ज्यादा सफल हो ऐसी शुभेच्छा। आपने पिछले पांच वर्षो में दिव्यांगो के विकास व् कल्याण के लिए बहुत सारे कार्य किये है और हमें पूर्ण विश्वास है की आप आने वाले सालों में भी इसी तरह से दिव्यांगो के विकास के लिए कार्य करेंगे।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

जून : 2019, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 03 अंक : 30

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

079 26405200

प्रेरणा दीपक: डॉ. प्रकाश मंकोडी

'परिवारजनों का योग्य सहयोग, शिक्षकों का उपयुक्त मार्गदर्शन, दृष्टिहीनता के प्रभाव को कम करे एसे उपकरणों का प्रयोग, एवं समग्र समाज द्वार स्वीकृति का एहसास कराने वाला द्रष्टिकोण दिव्यांग व्यक्ति की जीवन की राह को और आसान बना देता है और वह ज्यादा सहजता से अपना जीवन व्यतीत कर पाते है।' - डॉ. प्रकाश मंकोडी

डॉ. प्रकाश मंकोडी का जन्म १३, दिसम्बर, १९४९ के दिन हुआ था। एम.ए तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने नेत्रहीन बच्चों को शिक्षित करने का डिप्लोमा कोर्स किया। अंग्रेजी एवं संगीत वगैरह के कोर्सेज़ करने का बाद आज तक डॉ. प्रकाश मंकोडी समाजसेवा के कार्य में अविरत रूप से लगे हुए है। वर्तमान समय में डॉ. मंकोडी अंधजन विविधलक्षी तालीम केन्द्र, जामनगर के मानद मंत्री एवं आजीवन ट्रस्टी के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे है।

डॉ. मंकोडी के परिवार में उनकी पत्नी श्रीमती गीताबेन, पुत्री देवांगी, पुत्र जयदीप है। उनकी पत्नी शिक्षण के क्षेत्र में कार्य कर रही है। उनकी पुत्री विवाहित है और जामनगर की कोन्वेन्ट हाईस्कूल में शिक्षक है। पुत्र जयदीप रेडियोलॉजीस्ट है और जामनगर में ही प्राइवेट प्रेक्टिस कर रहे है। डॉ. मंकोडी के परिवार में एक पौत्र, एक पौत्री एवं एक दोहित्र भी है। डॉ. मंकोडी बताते है की उनके व्यक्तिव के विकास में माता-पिता, परिवार के सदस्यों एवं शिक्षको का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

डॉ. मंकोडी ने अपने कार्यकाल के दरम्यान 'नेशनल एसोसिएशन ऑफ़ इंस्ट्रक्टर्स ऑफ़ धी ब्लाईंड' द्वारा आयोजित विज्ञानं एवं भूगोल की तालीम, तीसरी राष्ट्रीय अंधजन परिषद, गुजराती ब्रेइल पद्धति जैसी तालीम वर्गो में भाग लिया है। इसके आलावा उन्होंने अंधजन शिक्षण पर विचार, बाल्यकाल में आनेवाली विकलांगता एवं उसके संसर्ग माध्यम, एशियन कोंफेरेंस अहमदाबाद-१९९५, लो विज़न कोंफेरेंस मुम्बई, डेफ ब्लाईंड एशियन कोंफेरेंस अहमदाबाद, समिट ऑफ़ माइंड, जैसी विविधता से भरपूर परिषदों में हिस्सा लिया है। डॉ. प्रकाश मंकोडी ने विकलांग भारतीय नीति, सी.बी.आर. गाइड लाइन्स, विकलांगो के लिए भारत की वैधानिक व्यवस्था, नेत्रहीन के लिए पाठ्यक्रम की रचना, नेतृत्व विकास एवं तालीम, जैसे अलग-अलग रिसर्च पेपर भी प्रस्तुत किए है।

डॉ. प्रकाश मंकोडी काफी सक्रीय व्यक्तित्वों में से एक है। उन्होंने दिव्यांग के विकास के लिए अखिल गुजरात अंधजन रमतोत्स्व, अखिल गुजरात क्रिकेट टूर्नामेंट, नेत्रहीन नाट्य महोत्सव, चेस टूर्नामेंट, रास-गरबा स्पर्धा, सुगम संगीत कार्यक्रम जैसे कई कार्यक्रमों का आयोजन किया है। उन्होंने एन.एन. बी. जामनगर जिल्ला शाखा, संघर्ष ब्रेइल त्रिमासिक, वर्किंग ब्लाइंड मैन्स हॉस्टल, मंदबुद्धि बच्चो के लिए डे-केर सेन्टर, एम्.पि.शाह डेफ ब्लाइंड यूनिट, स्वनिर्भर कम्प्युटर ट्रेनिंग जैसी संस्थाओ की रचना एवं निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

डॉ. प्रकाश मंकोडी को श्रम रोजगार विभाग, गुजरात का पारितोषिक, लायन्स क्लब एप्रिशिएशन पुरस्कार, नेत्रहीन प्रतिभा स्मृति पुरस्कार, अमरेली जिला प्रेरणा पारितोषिक, जैसे सम्मानों से नवाजा गया है। तदुपरान्त विकलांग कल्याण के क्षेत्रमें उन्होंने प्रदान की हुई सेवाओ के लिए जगतगुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, उत्तरप्रदेश की तरफ से उनको २० एप्रिल, २०१३में डोक्टर ऑफ़ लिटरेचर (डी.लिट्) की मानद पदवी प्राप्त हुई है।

दिव्यांग का संकल्प:

जिस दिन मोदी जीतेंगे उसी दिन शादी करूंगा, परिणाम आते ही बिना मुहूर्त लिए फेरे

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा की जोरदार जीत के बाद कार्यकर्ताओं में भी जोरदार उत्साह है, लेकिन इन सबके बीच मोदी का एक ऐसा प्रशंसक भी सामने आया है। जिसने उनकी जोरदार जीत के परिणाम आते ही बिना किसी मुहूर्त के शादी कर ली।

दरअसल, इस प्रशंसक ने संकल्प लिया था कि चुनाव परिणाम यदि मोदी के पक्ष में आते हैं तो वह उसी दिन शादी करेगा। दोपहर बाद जैसे ही रुझान आने शुरु हुए तो इस प्रशंसक ने अपना यह संकल्प पूरा भी कर लिया और विवाह कर लिया। जिसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। दरअसल, कस्बे के वार्ड 15 चेजारो के मोहल्ले के रहने वाले भानीपुरा निवासी दिव्यागं नथमल मोदी के बड़े प्रशंसक हैं। नथमल की शादी आसाम के नावगांव जिले के गांव होजाई की बबीता के साथ पांच दिन पहले होनी थी, लेकिन नथमल ने संकल्प लिया कि 23 जून को परिणाम भाजपा और मोदी के पक्ष में आने पर ही वे शादी करेंगे। गुरुवार को जब इसी के अनुरुप परिणाम आए तो नथमल बेहद खुश हुए। परिजनों ने तुरंत ही शादी की तैयारियां शुरू की। बान बैठाया गया। निकासी निकाली गई। लड़की के परिजनों ने भी तैयारी शुरू की। इसके बाद बिहडवाले श्याम बाबा के मंदिर में विवाह हुआ। इस मौके सांवरमल किशनलाल, श्रीराम शर्मा, त्रिलोकचंद शर्मा, मनोज कुमार भानीपुरावाला,कमल चैजारा, कुलदीपकुमार समेत अन्य लोग मौजूद थे।

जन्म से इस बच्चे के नहीं हैं हाथ, पैर थे टेढे, इसका टैलेंट देख मोदी ने की तारीफ

अगर मन में आगे बढ़ने का जज्बा हो तो दिव्यांगता कहीं पर भी आड़े नहीं आती है। पांच वर्षीय अहमद राजा के जन्म से दोनों हाथ नहीं है तथा पैर भी टेढ़े-मेढ़े हैं। जन्म के दौरान ही विकृत बच्चे को देखकर रिश्तेदारों ने पिता फरान अहमद गैसावत निवासी पीर की दरगाह को नसीहत दी कि बच्चे को अनाथालय छोड़ आए। गरीब पिता ने अपने कलेजे के टुकड़े को दिव्यांगता से परे हीरा बनाने की ठानी और अब नतीजा यह है कि वह दोनों हाथ नहीं होने के बावजूद अव्वल डांसर है। पिता फरान ने बताया कि 16 फरवरी 2014 को अजमेर के हॉस्पिटल में अहमद रजा का जन्म हुआ। विकृत आकृति के जन्मे पुत्र को देखकर माता-पिता एकबारगी हक्के बक्के रह गए। रिश्तेदारों ने उसे अस्पताल में ही छोड़कर चले जाने की नसीहत तक दे डाली परंतु दोनों ने हिम्मत नहीं हारी।

नारायण सेवा संस्थान से पैरों का कराया उपचार

माता-पिता ने राजा की परवरिश की, नारायण सेवा संस्था उदयपुर से पैरों का उपचार करवा उन्हें सीधा करवाया। सोशल मीडिया पर दिव्यांगों के

साहसिक कारनामों के वीडियो देखकर हिम्मत बंधी। राजा की कम उम्र से ही डांस व फुटबाल खेलने और गाना गाने में रुचि थी। राजा की फुर्ती देख

उन्होंने उसका वीडियो नारायण सेवा संस्थान के चेयरमैन प्रशांत अग्रवाल को दिखाया। जिस पर अग्रवाल ने राजा को संस्था की ओर से आयोजित दिव्यांग टैलेंट शो सहित दिव्यांगों के लिए आयोजित विभिन्न आयोजनों में भाग दिलाया। जिसके बाद उसकी जिंदगी ही बदल गई। राजा के पिता फरान अहमद ने बताया कि जो लोग उसे छोड़ने की बाते कहते थे वे ही आज उसकी प्रशंसा करते हुए नहीं थकते और उसके साथ सेल्फी लेने को लालायित रहते हैं। राजा अपने पैरों के सहारे जूते पहनने, तैयार होने एवं खाना खाने सहित अपने सभी काम बहुत तेजी के साथ स्वयं ही कर लेता है।अहमद राजा चार भाई-बहनों में सबसे छोटा है। उसके पिता ने बताया कि राजा के दो बड़े भाई व एक बड़ी बहन है।

मोदी-योगी ने सराहा

अहमद राजा फिलहाल राष्ट्रीय स्तर के समारोह में प्रतिभा दिखा रहा है। मुम्बई में फैशन शो के बाद 21 से 23 जनवरी को वाराणसी में नारायण सेवा संस्थान की ओर से 15वें प्रवासी भारतीय दिवस पर आयोजित दिव्यांग टैलेंट शो में भाग लिया। जिसमें पीएम नरेंद्र मोदी, यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आदि ने राजा की प्रस्तुति देख उसकी हौसला अफजाई की। नारायण सेवा संस्थान द्वारा राजा को हांगकांग सहित अन्य देशों में आयोजित समारोह व प्रतियोगिता में भेजने की तैयारी भी की जा रही है।

डांस,फैशन,पोएम व फुटबाल का शौक

दिव्यांग राजा को मकराना का बिंदास म्यूजिकल डांस ग्रुप निशुल्क डांस और गाने का प्रशिक्षण दे रहा है। ग्रुप संचालक भगवानदास ने बताया कि राजा किसी भी चीज को बहुत जल्दी से सीख लेता है। यह उसकी खूबी है। उसे डांस, गाने के साथ फैशन, फुटबाल व पॉयम का भी शौक है।

रोल मॉडल

पहले स्कूलों ने एडमिशन न दिया आज निशुल्क प्रवेश को आगे आए

संघर्ष

अहमद राजा के पिता फरान अहमद ने बताया कि फैशन, डांसिंग आदि शो में टैलेंट दिखाकर वह आगे बढ़ रहा था लेकिन मुश्किलें अभी ओर भी थी। चार वर्ष की आयु में उसका स्कूल में एडमिशन कराना चाहा। लेकिन दिव्यांग होने के कारण कोई भी स्कूल उसकी जिम्मेदारी नहीं ले रहा था। तीन माह पहले मकराना के ब्राह्मण टीबा स्थित मरुधर स्कूल के प्रधानाचार्य बाबूलाल विश्नोई ने दिव्यांग राजा की जिम्मेदारी लेते हुए उसे अपनी स्कूल में निशुल्क एडमिशन दिया। अब राजा स्कूल जाकर पढ़ाई कर रहा है तो साथ ही साथ अपने टैलेंट से सभी को प्रेरणा भी दे रहा है।

दिव्यांगों से मुलाकात के दौरान मोदी के हाथ में इस लड़की ने रख दी एक खास चीज, यह देख PM ने कहा- शाबाश और सिर पर रख दिया हाथ

वाराणसी में दिव्यांगजनों से मिलते वक्त मोदी भावुक नजर आए। इस दौरान एक दिव्यांग खिलाड़ी ने शूटिंग चैम्पियनशिप में जीते 21 हजार रुपए की राशि का चैक पुलवामा में शहीद हुए जवानों के परिजनों के लिए सौंप दिया।

-दिव्यांग खिलाड़ी सुमेधा पाठक के जज्बे को देखकर मोदी भावुक नजर आए। सुमेधा ने मोदी को चैक देते हुए कहा-यह शहीदों के परिजनों को मेरी ओर से। सुमेधा ने इच्छा जताई कि, काशी में इंटरनेशनल लेवल शूटिंग कोर्ट हो। सुमेधा बीकॉम लास्ट ईयर में हैं। वे प्री नेशन में ब्रांज मैडल और स्टेट में कई गोल्ड जीत चुकी हैं।

गायत्री विकलांग मानव मंडल द्वारा समूह-विवाह का आयोजन

गायत्री विकलांग मानव मंडल वडोदरा ने दिनांक २८-४-२०१९ के दिन समूह लग्न का आयोजन किया था। कार्यक्रम सुबह सात बजे शुरु होकर दोपहर दो बजे संपन्न हुआ। सुबह सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था जिसमे मालवा की मयुरि ने शानदार तरीके से कार्यक्रम प्रस्तुत किया। समूह लग्न में अठ्ठारह जोड़ों के माता-पिता नहीं थे. अन्य दिव्यांग एवं अंध व्यक्ति भी समूह लग्न में सामिल थे।

समूह लग्न में लडकीयाँ को भेट सौगात के तौर पर पलंग, तिजोरी, रसोई का सामान, वगैरह दिया गया था। उनको नए घर में रहने के लिए कोई दिक्कत न हो इस लिए उन्हें ये ५१००० का सामान दिया गया था। विवाह के बाद स्वादिष्ट भोजन का भी आयोजन किया गया था। आये हुए महेमान का स्वागत काफी प्रेमभाव से किया गया था। कार्यक्रम में हमने हरिद्वार जाने का आयोजन किया। जिसमे दिव्यांग वृद्ध निराधार संघ के साथ कार्यक्रम का सफलता से आयोजन किया जा रहा है। संस्था का लक्ष्य बेटी बचाओ, बेटी पढाओ है। १००० बच्चियों को पढ़ने का लक्ष्य है। जिसके माता-पिता न हो एसी लडकीयाँ को स्कुल फ़ीस वगैरह देकर उनका ख्याल रखना हमारा उद्देश्य है। यह उद्देश्य से फिर वो अपने पैरो पर खड़े हो सकेंगे।

CBSE Class 12th: दिव्यांग वर्ग में गुरुग्राम की लावण्या ने किया टॉप

संसाधनों के अभाव का रोना रोने से सफलता नहीं मिलती बल्कि विपरीत परिस्थितियों में बेहतर प्रदर्शन देकर मिसालें कायम होती हैं। हैरिटेज स्कूल सेक्टर- 62 की छात्रा लावण्या बालाकृष्णन ने इसी तरह की मिसाल कायम की है।

श्रवण दिव्यांग लावण्या ने न केवल जज्बा दिखाया बल्कि 97.8 प्रतिशत अंक प्राप्त कर दिव्यांग वर्ग में देश भर में पहला स्थान भी प्राप्त किया। मां से मिली प्रेरणा। लावण्या अपनी इस सफलता का श्रेय अपनी मां जया बालाकृष्णन को देती हैं। लावण्या की मां ने उन्हें इस सफलता के बारे में बताया तो लावण्या को विश्वास नहीं हुआ। परिणाम देखते ही भावुक लावण्या ने अपनी मां को गले लगाया और अपनी सफलता के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

लावण्या की मां उन्हीं के स्कूल में कार्यरत हैं। लावण्या ने साल भर नियमित पढ़ाई से ये सफलता पायी है। परीक्षा के दिनों में 12 घंटे तक पढ़ाई की है। लावण्या ग्राफिक डिजाइनिंग के क्षेत्र में जाना चाहती हैं। उन्होंने बताया कि उनके स्कूल में उनका आत्मविश्वास बहुत बढ़ा है। स्कूल में आठवीं कक्षा तक परीक्षाएं नहीं होतीं ऐसे में उन्होंने यह पहली बोर्ड परीक्षा दी थी।

संगीत में रूचि भले ही लावण्या को सुनने में समस्या है लेकिन उन्हें 50 प्रतिशत दिव्यांगता के बावजूद संगीत के सुर बेहद लुभाते हैं। ऐसे में वोकल के साथ साथ तबला वादन सीख रही हैं। उनका कहना है कि पहले उन्हें लगा कि यह क्षेत्र उनके लिए नहीं है लेकिन फिर धीरे-धीरे लगने लगा कि तबला वादन सीखने से उनका आत्मविश्वास और बढ़ा। वे पेंटिंग औक डूडलिंग में भी रूचि रखती हैं।

विषयवार अंक इंग्लिश- 92 पॉलिटिकल साइंस- 100 सोश्योलॉजी- 99 होमसाइंस- 99 पेटिंग- 99

UP Board Result 2019: पैरों से लिखी सफलता की कहानी, कायम की मिसाल

अगर हौसला हो तो कोई भी काम नामुमकिन नहीं है। सरोजनी नगर के क्रिएटिव कॉन्वेंट कॉलेज से दसवीं के छात्र तुषार विश्वकर्मा पुत्र राजेश विश्वकर्मा ने पैरों से सफलता की इबारत लिख दी। तुषार ने कक्षा में प्रथम स्थान पाकर दिव्यांग बच्चों के लिए प्रेरणास्रोत बन गया है।

तुषार पोलियो ग्रस्त हो जाने के कारण हाथों से लिख नहीं सकता है। स्कूल जाने की जिद और माता-पिता के प्रोत्साहन के बाद पैरों से लिखने की कोशिश की और धीरे-धीरे हाथों की जगह पैरों ने ले ली। पैरों से लिखकर हाईस्कूल की परीक्षा में प्रथम श्रेणी (67 प्रतिशत) प्राप्त कर विद्यालय और माता -पिता का नाम रोशन किया। सफलता के पीछे क्रिएटिव कॉन्वेंट के प्रबंधक योगेंद्र सचान का भी योगदान शामिल है।

उन्होंने इस दिव्यांग छात्र की हर समय निगरानी रखते हुए विशेष रूप से प्रोत्साहित किया। क्रिएटिव कॉन्वेंट कॉलेज का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा। इंटरमीडिएट के कुल 63 छात्र-छात्राएं प्रथम श्रेणी और हाई स्कूल के कुल 51 छात्र-छात्राएं ने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इंटरमीडिएट के छात्र हार्दिक सचान ने 500 में 425 अंक पाकर कॉलेज में प्रथम स्थान हासिल किया।

अमिताभ बच्चन लिखते हैं गुजरात की दिव्यांग वंदना कटारिया को चिट्ठी, पैरों से चलाती है अपनी दुकान

सामान्य व्यक्ति जो काम नहीं कर सकता, उसे जैतपुर की रहने वाली एक विकलांग लड़की वंदना कटारिया बखूबी कर रही है। बीकॉम की डिग्री हासिल करने के बाद उसने फोटोकॉपी की दुकान खोली, जिसमें वह अपने पैरों से फोटोकॉपी करती है। शरीर के 80% दिव्यांग होने के बावजूद वह अपनी लाइफ से खुश है और बच्चन परिवार की जबरदस्त फैन है। इसी वजह से उसकी दुकान में अमिताभ बच्चन की ढेर सारी तस्वीरें रखी हुई हैं। मगर, सबसे खास बात यह है कि बच्चन फैमिली उसकी लिखी चिट्ठियों का जवाब भी देती रहती है। अमिताभ बच्चन समेत उनके कई फैमिली मेंबर्स को वंदना नियमित खत लिखती है और मुंबई से उनका जवाब भी आ जाता है।

वंदना पैरों से चलाती है कंप्यूटर, फोटोकॉपी भी निकालती है जानकारी के अनुसार, जेतपुर के अयुब महल के पास वंदना की फोटोकॉपी की दुकान है। आमतौर कम्प्यूटर चलाने समेत फोटोकॉपी करने के लिए हाथों की जरूरत पड़ती है, मगर हाथों के अक्षम होने की वजह से वंदना ये काम अपने पैरों से करती है। उसे देखने वाले लोग ताज्जुब करते हैं कि वह अपने दोनों पैरों से न सिर्फ कंप्यूटर चलाती है, बल्कि फोटोकॉपी भी निकालती है। यह दोनों काम करने की उसकी स्पीड हाथों से जरा भी कम नहीं है।

वंदना अमिताभ बच्चन की बड़ी फैन है। उसकी छोटी सी दुकान में चारों तरफ बच्चन परिवार की तस्वीरें लगी हुई है। वंदना अमिताभ, अभिषेक, ऐश्वर्या और जया बच्चन को नियमित रूप से खत लिखती है। इतना ही नहीं इस परिवार के सभी लोग वंदना के खतों का जवाब भी देते हैं। बच्चन परिवार द्वारा भेजे गए खतों को वंदना ने खास संभालकर रखा है।

सुपरस्टार अमिताभ बच्चन से मिलना सबसे बड़ी ख्वाहिश हालांकि अमिताभ बच्चन से मिलने की वंदना की ख्वाहिश आज तक पूरी नहीं हुई है। लेकिन जैसे बच्चन परिवार द्वारा खतों के जवाब मिलते हैं, उसे विश्वास है कि एक दिन अमिताभ से रूबरू होने की उसकी ख्वाहिश जरूर पूरी होगी।

माता ने पढ़ाया, अपने पैरों पर खड़े होना भी सिखाया। वंदना के यहां तक पहुंचने में उसकी मां पुष्पाबेन का अहम रोल रहा। उन्होंने ही न सिर्फ वंदना को पढ़ाया बल्कि अपने पैरों पर खड़े होना भी सिखाया है। माता द्वारा दी गई प्रेरणा के कारण ही विकलांगता को खुद के लिए मुश्किल नहीं माना। आज वंदना अपनी जरूरतों के लिए किसी की मोहताज नहीं है, वह अपना तमाम खर्च फोटोकॉपी की दुकान चलाकर आसानी से निकाल रही है।

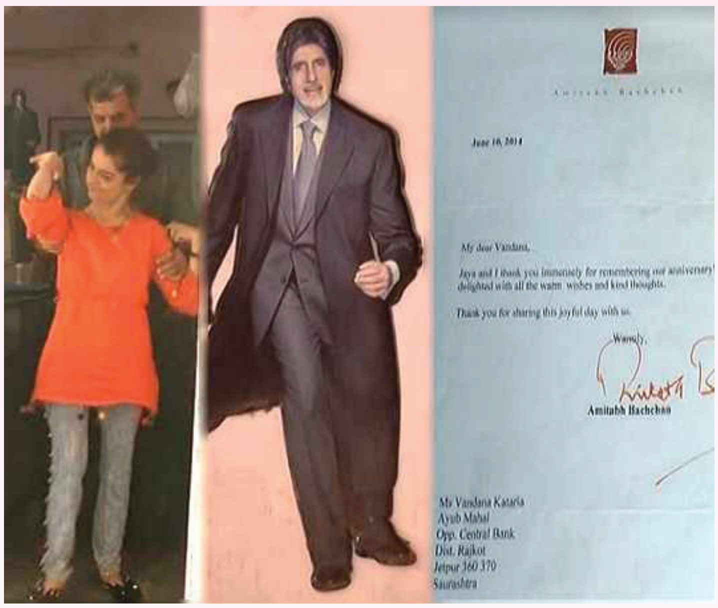

बेटी बचाओ...बेटी पढाओ

गायत्री विकलांग मानव मंडल द्वारा हर साल की तरह इस साल भी गरीब निराधार लडकीयाँ को मुफ्त शिक्षण देने का आयोजन किया गया है। संस्था द्वारा इस योजना का लाभ १००० जितनी लडकीयाँ को मिलेगा. कक्षा ३ से ८ तक की विद्यार्थिनियो को सभी स्टेशनरी दी जाएगी। यह बच्चियों के आसपास रहते लोग एव उनके रिश्तेदार भी उनका नाम अर्जित करा सकते है। नाम अर्जित करने के लिए स्कुल का सर्टिफिकेट, मार्कशीट, आधार कार्ड, फोटो अपने साथ रखे. जो बच्चियों के माता-पिता नहीं है ऐसीं लडकीयाँ की स्कुल फ़ीस भी भरी जायेगी। जो कोई भी दानवीर इस पुन्य कार्य में मदद करेंगे उनको संस्था की तरफ से ए.टी.जी. सर्टिफिकेट माफ़ी रसीद दी जाएगी। उसके साथ संस्था का प्रमाणपत्र दे कर उनका सम्मान किया जायेगा।

हमको विश्वास है की आप जैसे दानवीर हमें इस कार्यमें जरुर मदद करेंगे। इसके साथ विकलांग, विधवा, वृद्ध, निराधार बहेनो को साड़ी वितरण के प्रोग्राम का आयोजन किया जायेगा। दिव्यांग भाई-बहेनो को जीवन जरूरियात की ट्राईसिकल, व्हील चेयर, केलिपर्स, बूट, स्टिक, वगैरह देकर प्रोत्साहित किया जायेगा। इसके साथ दिव्यांगता बताता हुआ फोटो, पासपोर्ट फोटो, डोक्टर का सर्टिफिकेट, आधारकार्ड देकर अपना नाम दर्ज करने को विनंती।

हरिद्वार हरकी पोडी यात्रा

गायत्री विकलांग मानव मंडल संस्था द्वारा हर साल की तरह इस साल भी हरिद्वार-हरकी पोड़ी की यात्रा का आयोजन किया गया है। यात्रा में जाने को इच्छुक भाई-बहन, वृद्ध, निराधार, दिव्यांग अपना नाम अर्जित करा सकते है। उनको जल्द से जल्द नाम अर्जित कराने का सूचन है। यह यात्रा को ट्रेन द्वारा करने के लिए पहले से रिज़र्वेशन किया जाएगा। रिज़र्वेशन करने के लिए अपना फोटो, इलेक्शन कार्ड, आधार कार्ड वगैरह लेकर संस्था की ऑफिस पर पधारे।

यात्रा दरमियान हरकी पोड़ी गंगा मैया के दर्शन, रिषीकेश, कनखल, गायत्री शक्तिपीठ, भारत माता मंदिर, मन्सादेवी मंदिर, चंडीदेवी मंदिर, राम झुला, लक्ष्मण झुला, भीम गोडा नीलकंठ, मसूरी, देहरादून, जैसे सभी स्थलों पर खाने-पीने एवं रहने की व्यवस्था की जाएगी।

पीथमपुर की बैग इंडस्ट्री में 250 दिव्यांगजन कर रहे काम

कन्हैया, रामकिशोर, पवन, नरेंद्र पैरों से सौ फीसदी निशक्त हैं। वे कहीं भी काम मांगने जाते तो उन्हें भगा दिया जाता था। लेकिन सालभर पहले उनकी जिंदगी में बदलाव आया। उन पर एक इंडस्ट्री ने न केवल भरोसा किया बल्कि आर्थिक रूप से भी सशक्त बनाने में मदद की।

छतरपुर के रहने वाले धर्मदास के दोनों हाथ नहीं हैं, लेकिन कम्प्यूटर फर्राटे से चलाता है। बरसों तक नौकरी के लिए परेशान रहा, लेकिन यू ट्यूब पर एक वीडियो देखकर पीथमपुर पहुंच गया। वहां उसकी काबिलियत पर भरोसा किया और अब वह कम्प्यूटर के साथ-साथ सुपरवाइजर का भी काम करने लगा। बैतूल के मूक-बधिर दीपक साहू की भी कुछ ऐसी ही कहानी थी। अपनी बात समझा नहीं पाने के कारण कहीं नौकरी नहीं मिल पाती। हताश होकर इंदौर आया। यहां से कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं ने पीथमपुर की राह दिखाई। उसे नौकरी भी मिली और सबका चहेता भी हो गया।

जिन लोगों को उनकी शारीरिक कमजोरी देख अकसर धुत्कार व निराशा मिलती थी उन पर पीथमपुर स्थित एक औद्योगिक कंपनी ने भरोसा किया। बैग निर्यात करने वाले एक उद्योग में चपरासी से लेकर सुपरवाइजर तक दिव्यांग कर्मचारी हैं। सालभर पहले 10-15 दिव्यांगों को यहां रोजगार देकर सामाजिक भागीदारी की शुरुआत हुई थी। अब इनकी संख्या 250 तक पहुंच चुकी है। देश के अलग-अलग कोने से आए ये विशेष लोग छोटे से लेकर बड़े काम तक कर रहे हैं। कोई बैग सिलने का काम, कोई हैंडल लगाने का, कोई क्वालिटी चेकिंग का तो कोई हिसाब-किताब रखने का काम कर रहा है। उद्योग द्वारा इन्हें ऑनरोल नौकरी दी गई है जिससे उनका भविष्य भी सुरक्षित हो सके। इस सामाजिक भागीदारी के लिए मप्र सरकार ने हाल ही में महर्षि दधीचि सम्मान के लिए उद्योग का नाम प्रस्तावित किया है।

यू ट्यूब पर वीडियो देख पहुंचे रोजगार पाने :

1 साल पहले सांकेतिक भाषा विशेषज्ञ ज्ञानेंद्र पुरोहित ने प्रबंधन के साथ सामाजिक भागीदारी का यह प्रोजेक्ट तैयार किया था। उद्योग में दिव्यांगों की भागीदारी बढ़ाने सांकेतिक भाषा में एक वीडियो यू ट्यूब पर अपलोड किया गया। यह देशभर के दिव्यांगों में खूब चर्चित हुआ। मूक-बधिरों के साथ काम करने के लिए उद्योग के अफसरों व प्रबंधन ने भी सांकेतिक भाषा सीखी। सांकेतिक भाषा विशेषज्ञ पुरोहित ने प्रबंधन को प्रशिक्षण दिया। कर्मचारियों को अपनी बात कहने के लिए मोबाइल पर व्हॉट्सएप ग्रुप भी बनाया गया है। इसके माध्यम से समय-समय पर दिव्यांग कर्मचारियों की काउंसलिंग की जाती है।

रोजगार देने वाली प्रदेश में पहली इंडस्ट्री

यह इंडस्ट्री सभी प्रकार के दिव्यांगों को रोजगार दे रही है। यह संभवत: प्रदेश में पहली इंडस्ट्री है जहां एक साथ इतनी बड़ी संख्या में दिव्यांग काम कर रहे हैं। दो बार भारत सरकार को बेस्ट एम्प्लॉयर अवार्ड के लिए भी इस इंडस्ट्री का नाम प्रस्तावित कर चुके हैं। अन्य उद्योगों को भी इनसे प्रेरणा लेना चाहिए।

- भरतसिंह गौर दिव्यांग रोजगार अधिकारी, इंदौर जिला

कभी सर्कस वाले 50,000 में खरीदने आये थे इस तीन फ़ीट के फेमस हीरो को

अगर सपने सच्चे हो और आप में उसको पूरा करने का जज़्बा हो तो फिर उसे पूरा होने से कुछ भी रोक नहीं सकता। यह बात को साबित कर दिखाया है बॉलीवुड एक्टर **केके गोस्वामी (K K Goswami)** ने। केके का कद महज 3 फीट है, लेकिन अपने जीवन में संघर्ष करने के बाद उन्होंने बॉलीवुड में जिन ऊंचाईयों को छुआ है, वह बेहद ही हैरान कर देना वाला और तारीफ करना वाला है।

मुंबई में किया खूब संघर्ष

केके का अपने बॉलीवुड तक के सफर के दौरान किए गए संघर्षों के बारे में कहना है कि जब वह मुंबई एक एक्टर बनने का सपना लेकर पहुंचे तभी से उनका स्ट्रगल शुरू हो गया। 7-8 साल तो उन्होंने सिर्फ एक वक्त रोटी खाकर ही निकाले। छोटा कद होने के बावजूद गोस्वामी ने अपनी एक्टिंग एव जिंदादिली से सब का दिल जीत लिया है।

एक बार उन्हें उनके ही कद-काठी का आदमी मिला जिसने बीयर बार में नौकरी करने की सलाह दी। उसने उन्हें बताया कि वहां नौकरी करने पर उन्हें 500-700 रुपए मिलेंगे और साथ ही अच्छा खाना। उस व्यक्ति की बात मान कर बीयर बार पहुंचे। जब वह अंदर जाने लगे तो बार के वॉचमैन ने उन्हें डंडा मारकर बाहर से ही भगा दिया। यह पल केके की जिंदगी का वो पल था जब उन्होंने ठान लिया कि अब वह हर हाल में एक्टर बनकर रहेंगे।

केके की संघर्ष की कहानी सुनकर तो हर कोई हैरान रह जाए। मुंबई में अपने संघर्ष के दिनों में केके हफ्ते में सिर्फ एक दिन पूरा खाना खाते थे और बाकी दिन 6 दिन वह पानी पीकर बिताया करते थे। उनकी हालत इतनी खराब हो गई थी कि उन्हें पानी देखकर भी उल्टी आती थी।

वह खाने को इतना तरस गए थे कि सिर्फ एक वक्त अच्छे खाने के लिए बिना पैसों के भी काम करने को तैयार रहते थे। कई बार हौसला टूटा भी, कई बार मन में आया कि वापस बिहार लौट जाएं लेकिन बीयर बार वाली घटना ने उनके दिल और दिमाग पर इतना गहरा असर डाल दिया था कि अब एक्टर बनना ही उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन गया था।

छोटा कद बना समस्या लेकिन उसी का फायदा उठाया

केके का कहना है कि कम कद होना आज भी एक समस्या ही है। क्योंकि

आज मैं एक एक्टर हूं इसलिए लोग मुझे स्वीकारते हैं। जब मैं एक परिचित चेहरा नहीं था तब तक मैं कभी अपने बेटे के साथ उसके स्कूल नहीं जा सका क्योंकि जब भी मैं उनके स्कूल जाता था तो बच्चे मेरा मज़ाक उड़ाते थे जिसके कारण मेरे बेटे को शर्मिंदा होना पड़ता था।

मेरे बेटे को शर्मिंदा ना होना पड़े इसलिए मैं अकसर अपने बेटे के किसी भी स्कूल फंक्शन में अपनी पत्नी को भेजा करता था। लेकिन इन सब चीजों ने मेरे ऊपर बहुत असर डाला और मैनें यह ठान लिया कि मैं यह साबित करके रहूंगा कि **आदमी कद से नहीं, हुनर से बड़ा होता है।**

टीवी शो में अपने किरदार के बारे में बताते हुए केके ने बताया कि पहले ज्यादातर स्क्रिप्ट राइटर उनके जैसे कम कद वालों को सिर्फ शो की टीआरपी बढ़ाने के लिए शामिल किया जाता है। लेकिन अब ऐसा नहीं है, अब हालात बदल चुके हैं। हालांकि अभी हालात शायद इतने नहीं बदले हैं कि हमें लीड रोल के रूप में जगह दी जाए।

गोस्वामी ने बताया कि मेरा और मेरे छोटे भाई का कद छोटा है। जब इस बात का पता एक सर्कस वाले को चला तो वह मेरे पिता से मिला। उसने पिता से कहा कि बड़े बेटे को मुझे दे दिजिए। आपको 50 हजार रुपए देंगे। इसको सर्कस का काम सिखाएंगे। आप इससे मिल भी सकते हैं। सर्कस वाले की बात सुनकर मैं डर गया था। पिता जी ने मुझे बेचने से इनकार कर दिया तब राहत मिली। मैं उस समय 10-12 साल का था।

लव मैरिज की कहानी भी फिल्म से कम नहीं

जवान हुए तो शादी तय हुए, लेकिन ऐन वक्त पर ससुराल वाले बेटी देने से इंकार करने लगे। लड़की ने जब सिर्फ और सिर्फ इनसे ही शादी करने की जिद की तब वे दुल्हा बनकर ससुराल गए, लेकिन दिल में डर था। केके गोस्वामी की छोटी कद की जानकारी के बाद भी होने वाली पत्नी उनसे शादी करने को तैयार थी।

घरवाले उसे समझा रहे थे कि अभी भी मौका है। शादी से इनकार कर दो और अपने लिए कोई अच्छा लड़का चुनो। इस पर लड़की का कहना था कि शादी तय होने के दिन से ही मैं उन्हें अपना पति मानने लगी हूं। वे नाटे हुए तो क्या हुआ मैं उन्हीं से शादी करूंगी।

लड़की के इस जवाब के बाद भी गोस्वामी को बरात ले जाने से डर लग रहा था। उन्हें डर था कि बैंड बाजे के साथ पूरे गांव के लोगों को बरात में ले जाउं और अगर लड़की ने मुझे देख कर शादी से मना कर दिया तो? ऐसा होने पर पूरे समाज में बदनामी होती। इस डर से गोस्वामी ने मंदिर में शादी की।

केके की पत्नी का नाम पिंकू गोस्वामी हैं जो उनसे लंबाई में 2 फीट बड़ी हैं। यानि कि पिंकू की लंबाई 5 फीट है। इस शादी से दोनों को एक बेटा भी है जो इस वक्त 10 साल का हो रहा है। बता दें कि के के अपनी दमदार एक्टिंग के लिए आज भी जाने जाते हैं।

गोस्वामी ने बताया कि **कैसे गांव के लोगों का ताना सहने को मजबूर एक शख्स स्टार बन गया। उन्होंने कहा कि छोटे कद के चलते उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। मेरा घर बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के पानापुर में है। गांव में जब भी पड़ोसी झगड़ा करते तो मां को ताना मारते थे। एक दिन सर्कस वाला गोस्वामी को खरीदने के लिए घर आ गया था।**

साथी जवानों को खोने वाले सीआरपीएफ हवलदार ने बच्चे को खाना खिलाया, प्रशस्ति पत्र मिला

14 फरवरी को पुलवामा हमले में 40 साथियों को खोने वाले सीआरपीएफ जवान हवलदार इकबाल सिंह ने यहां दिव्यांग बच्चे को अपना भोजन खिलाया। इसके लिए सीआरपीएफ महानिदेशक ने उन्हें प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इकबाल 14 फरवरी को सीआरपीएफ काफिले पर हुए हमले का हिस्सा थे। वे हमले के दौरान सीआरपीएफ काफिले में ट्रक चला रहे थे।

इकबाल सिंह सीआरपीएफ में ड्राइवर हैं। 13 जून को वह श्रीनगर के नवकदल चौक पर तैनात थे। दोपहर के लंच टाइम में उन्होंने एक बच्चे को भूखा देखा। इसके बाद उन्होंने अपना भोजन बच्चे को दे दिया। बच्चा दिव्यांग था, जिसके बाद इकबाल सिंह ने खुद बच्चे को खाना खिलाया।

वीडियो वायरल हुआ

इस घटना का किसी ने वीडियो शूट कर सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया। अब यह वायरल हो गया है। वीडियो सामने आने के बाद सीआरपीएफ महानिदेशक ने उनकी तारीफ की और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

पुलवामा हमले में बचाई थी साथियों की जान

पुलवामा हमले में उन्होंने अपने कई साथियों को खो दिया। हमले के बाद उन्होंने अपने कई घायल साथियों को अस्पताल पहुंचाकर उनकी जान बचाई थी। पुलवामा हमले के बाद से ही घाटी में तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई है।

दिव्यांग कलाकार ने भव्य जीत पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को बधाई दी

लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की शानदार जीत पर उत्तम कुमार भारद्वाज जो की दिव्यांग होते हुए भी बहुत ही जबरदस्त पेंटिंग्स अपने पैरों से बनाते हैं उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बाधाई दी है।

और भी कलाकारों ने जैसे आशा भोसले और रजनीकांत जैसे दिग्गज भी शामिल हैं। इनके अलावा सोनू सूद, वरुण धवन और रितेश देशमुख ने भी प्रधानमंत्री मोदी को उनकी इस'शानदार जीत' के लिए बधाई दी।

वॉइस टू दिव्यांग

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट